REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

पूर्वोत्तर भारत के लोकगीत एवं लोकनृत्य: एक संक्षिप्त अध्ययन

युगल किशोर यादव
सहायक प्रोफेसर (हिंदी विभाग), तिनसुकिया कॉमर्स कॉलेज
पो.- श्रीपुरिया(Sripuria) तिनसुकिया , असम.

सारांश

भारत विविधताओं से भरा देश है । यहाँ पर अनेक संस्कृतियोंमतों, मान्यताओं, रीति-रिवाजों एवं परंपराओं को मानने वाले लोग रहते हैंजो अपनी-अपनी संस्कृतियों के वाहक होने के साथ-साथ अन्य संस्कृतियों को भी सहज रूप से मान-सम्मान देते हैं। सभ्यता, संस्कृति, भाषा-बोली लोगों के रहन-सहन, खान-पान आदि की विशिष्टताओं को आधार बनाकर ही भारत के अलग-अलग क्षेत्रों का नामकरण किया गया हैं। भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र इनमें से ही एक है जिसे 'पूर्वोत्तर भारत' नाम से पुकारा जाता है।'सात बहनों'(seven sisters) के नाम से सुशोभित पूर्वोत्तर क्षेत्र अपने छोटे भाई सिक्किम सहित सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक और प्राकृतिक दृष्टि से अपनी विशिष्ट पहचान रखता है तथा भारतसंघ की लोकप्रियता का एक कारण है। चूँकि पूर्वोत्तर आठ राज्यों का समूह हैं, फलस्वरूप यहाँ अलग अलग संस्कृतियों के दर्शन होते हैं इन संस्कृतियों में यहाँ के लोगों के जीवन यापन, उनके विश्वास, उत्सव-पर्व, रीति-नियम आदि की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। पूर्वोत्तर के लोकगीत एवं लोकनृत्य ने यहाँ के जनजातीय संस्कृति को लोकप्रसिद्ध बनाया है।

बीज शब्द: पूर्वोत्तर भारत, लोक संस्कृति, लोकगीत, लोकनृत्य, विशेषता ।

प्रस्तावना

'लोक संस्कृति' के मामले में पूर्वोत्तर प्रदेश की भारत के अन्य प्रदेशों के मुकाबले अपनी अलग पहचान है, कारण यहाँ लोक संस्कृति के विविध रूप के दर्शन होते हैं। लोक संस्कृति के जितने भी रूप यहाँ देखने को मिलती है उतना अन्यत्र भारत के किसी भी प्रदेश में मिलना दुर्लभ है।"पूर्वोत्तर भारत सम्पूर्ण राष्ट्र की धड़कन है। यह वन-प्रदेश भाषाओं और संस्कृतियों का रत्नाकरहै। पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक धरोहर बहुत सम्पन्न है। यहाँ की संस्कृति अनोखी है, और वर्षों से इसके कई अवयव अबतक अक्षुण्य है।'[1] पूर्वोत्तर भारत विभिन्न जाति-जनजातियों की लीलाभूमि रही है। इन्हीं जनजातियों के वैविध्यमय सांस्कृतिक उपादानों ने पूर्वोत्तर भारत की 'लोक संस्कृति' को समृद्ध किया है। 'लोक संस्कृति' से हमारा तात्पर्य 'लोक अर्थात जनसामान्य की संस्कृति' से है, जिनमें प्रत्येक जनजातीय समाज की सांस्कृतिक उपादान एवं विशेषताएँ निहीत हैं। चूँकि पूर्वोत्तर भारत आठ (असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम) अलग-अलग राज्यों का समूह हैं। हर प्रादेशिक क्षेत्र की अपनी-अपनी संस्कृति व लोक संस्कृति हैं जिसके अंतर्गत उनके रहन-सहन, आचार-व्यवहार, खान-पान, उत्सव-पर्व, लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाएँ इत्यादि शामिल हैं, जिसका समन्वित रूप हमें पूर्वोत्तर के 'लोक साहित्य' के रूप में देखने-सुनने और पढ़ने को मिलता है जो लिखित रूप में भले ही कम रहा हो, परंतु मौखिक रूप से पूर्वोत्तर की जनसामान्य की ज़ुबानी बनी हुई है।

पूर्वोत्तर भारत की लोक संस्कृति को उत्कृष्टता

प्रदान करती है यहाँ की जन-जातीय समाज में प्रचलित लोकगीत एवं लोकनृत्य। लोकगीत एवं लोकनृत्य के मामले में पूर्वोत्तर प्रदेश एक धनी प्रदेश है। प्रस्तुत शोधपत्र में पूर्वोत्तर भारत की लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का एक संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत करने की कोशिश की ई है।

पूर्वोत्तर भारत के लोकगीत

'लोकगीत' का अर्थ है लोक के गीत अर्थात जनमानस में प्रचालित एवं जनमानस द्वारा गाया जाने वाला गीत'लोकगीत' कहलाता है। लोकगीतों का सीधा संबंध किसी एक निर्दिष्ट समाज से होता है। यही कारण है कि लोकगीतों के रचियता कई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरे समाज का स्वर इसमें मुखरित होता हैं जिसमें उस समाज के लोक में प्रचलित परम्पराएँ विश्वास, रीति-रिवाज आदि का रूप परिलक्षित होता है।

पूर्वोत्तर भारत जनजातीय बहुल इलाका है। यहाँ का जनजातीय समाज संगीतप्रिय होने के कारण पूर्वोत्तर भारत लोकगीतों का सृजनात्मक स्थल रहा है। यही कारण है कि पूर्वोत्तर समाज अपने लोकगीतों के कारण आकर्षण का केंद्र रही है। उन्होंने सदियों से चली आयी अपनी सामाजिक परंपराओं, लोक-विश्वसों को मधुर संगीतमयी रूप देकर सजाया है जिसका सुंदर एवं आकर्षक रूप हमेंलोकगीतों में देखने को मिलता है। पूर्वोत्तर भारत के अधिकत्तर लोकगीत उनके धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बंधित रहे हैं। उत्सवपर्व को लेकर यहाँ की एक खास बात सुनने को मिलती है वह यह है कि पूर्वोत्तर के लोग ईश्वर की उपासना प्रकृति के रूप में या फिर प्रकृति प्रदत्तवस्तुओं के रूप में करते हैं। उदाहरणस्वरूप कार्बी आंग्लंग असम का कार्बी जनजाति बहुल क्षेत्र हैं। कार्बी समाज अपने धार्मिक सामाजिक रीति-रिवाजों एवं उत्सव-पर्वों के प्रति पूर्ण समर्पित है। "वे नद-नदियों, पहाड़-पर्वतों, पेड़-पौधों और शिलाओं को देवदेवताओं केप्रतीक रूप में कल्पना करते हुए पूजा सेवा करते हैं। ऐसी एक पूजा का नाम है 'चोजन-आर्णम', जिनमें स्वर्गराज इंद्र तथा दूसरे देवदेवताओं को पूजा जाता है।[2] चूँकि अधिकत्तर लोकगीतों का संबंध धार्मिक लोकानुष्ठानों से हैं इसलिए इन लोकगीतों की प्रस्तुति विशेषकर उत्सव-पर्वों के दौरान ही की जाती है। "ऐसी ही एक भक्तिमूलक लोकगीत कार्बी जनजाति के लोक में प्रचलित है:--

ते हेम हेम हेम
ऐ ना देहाल छारपे देहाल छारप
हालि चुमछा आछोक चुमछि आछोके
तून पांथिरछि दा पांथिरछि
देहाल आपक दे पात आपक
ना आर्दम आथे ये ना आर्दि आथेये।

अर्थात:- हे बूढ़ा गोसाई, बूढी गोसानी, तुम्हें पूजने हेतु शराब बनायीपत्ते को लाकर पूजने की तैयारियाँ की। तुम मेरी पौत्र-पौत्री को देखना, रोग-व्याधि से बचाये रखना।"[3]

प्रेम-परिणय से परिपूर्ण लोकगीतों की भरमार पूर्वोत्तर भारत में देखने और सुनने को मिलती है। युवकयुवातियाँ अपने भावी जीवन की सुनहले सपनों को संजोती हुई परस्पर मिलन की भावना लिए कभी प्रेमगीत गाती है तो कभी अपने प्रियतम से दुर होनपर विरह-वेदना से परिपूर्ण गीत। असम के लोक प्रसिद्ध 'वैशाख बिहू' में गाये जाने वाला एक प्रेममूलक बिहू गीत प्रस्तुत है-

"बिहू मारि थाकिबर मने समनीया
बिहू मारि थाकिबर मन
बिहू मारि थाकोते पलुवाई निनिबा
भरिब लागिब धन।"[4]

अर्थात:- बिहू नृत्य में मग्न नायिका अपने प्रियतम से कहती है ओप्रीतम, मुझे बिहू नाचने में मग्न रहने की इच्छा है। लेकिन बिहू नाचने के दौरान ही मुझे भगाकर न ले जाना, वर्ना दंड स्वरूप तुम्हें जुर्माना भरना पड़ेगा।

पूर्वोत्तर भारत की लोकगीतों की यह विशेषता रही है कि इन लोकगीतों में उनकी निश्चल भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई हैं, जिनमें न कोई बनावटीपन है न कोई दिखावा। ये भावनाएँ कहीं दुखवेदना के रूप में प्रकट हुई है तो कहीं हर्ष के रूप में। लोक जीवन में व्याप्त रोग व्याधि, दरिद्रता तथा अन्य कारणों से उत्पन्न दुखों-कष्टों को वे गीत रूप में गाकर अपनी भावनाओं को प्रकट करते हैं। "मिसिंग लोकगोष्ठी में एक निराली प्रथा है कि ये लोग अपने दुख-वेदनाओं को रो-रोकर गाते रहते हैं। यथा-

द:ब काबान
अईया नोड़ायो नोयो नाड़ानी
अइनम नड़ानो ड़ा नातिद बम दुनो।

(जंगल वन-लताएँ जैसे पेड़ों को पकड़ लेती है। तुम्हारी यादें मुझे उसी तरह जकड़े हुए हैं।[5]

लोकगीतों के मामले में पूर्वोत्तर भारत एक धनी प्रदेश है। इसी प्रकार के अनेक लोकगीतों ने पूर्वोत्तर भारत के लोक साहित्य के भण्डार को भरा है।

पूर्वोत्तर भारत के लोकनृत्य

"वस्तुत: नृत्य मानव जीवन का अभिन्न अंग है। मानव की कहानी जितनी पुरानी है नृत्य का इतिहास भी उतना ही पुराना है।"[6] अत: मानव जब से आदिम जीवन व्यतीत करता था, किसी कारण जब वह उछल-कूद कर हर्षोल्लास के साथ अपनी खुशी जाहिर करता था नृत्य की शुरुआत मानी जा सकती है।

पूर्वोत्तर भारत रंगारंग लोक संस्कृतियों का भण्डार हैं। अपनी बहुरंगी लोकनृत्य के कारण पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति शोभनीय है। लोकनृत्य की जो छवि पूर्वोत्तर में देखने को मिलती है उसने पूर्वोत्तर प्रदेश को पुरे भारतवर्ष में विशिष्ट पहचान दिलाई है। चूँकि पूर्वोत्तर भारत बहुरंगी लोक संस्कृतियों का खजाना हैं फलस्वरूप लोकनृत्य के विविध रूपों के दर्शन होते हैं।

धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति पूर्वोत्तर के जनजातीय समाज की विशेष रूचि रही है। यहाँ जितने भी धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता हैं, उनमें पूर्वोत्तर के लोकनृत्य की प्रस्तुति अवश्य देखने को मिलेंगी। पूर्वोत्तरीय जनजातीय समाज अपने इष्ट देवी-देवतओं के प्रतिपूर्णरूपेण समर्पित अपनी भक्ति-भावना का प्रदर्शन नृत्य द्वारा भी करते हैं, अर्थात नृत्य उनकी भक्ति पद्धति का एक अहम हिस्सा है। मणिपुर का 'लाइहारोवा नृत्य', मेघालय का 'नोडकेम नृत्य', तथा असम की चाय जनगोष्ठी के 'करमपूजा' के दौरान पारम्परिक 'करमनृत्य' आदि नृत्यों का संबंध उत्सव-पर्व से हैं, जिनमें उन्होंने ईश्वर के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए उनकी भक्ति-भावना प्रकट हुई है।

पूर्वोत्तर के आधिकत्तर उत्सव-पर्व कृषि से जुड़ा है कारण पूर्वोत्तर भारत कृषि प्रधान क्षेत्र है। यही कारण है कि पूर्वोत्तर की लोकगीतों एवं लोकनृत्यों में कृषि सभ्यता का स्पष्ट प्रभाव दिखलाई पड़ता है। फसल की बुवाई से लेकर फसल की कटाई तक तथा खलिहान से लेकर भण्डार घर में फसल जमा होने तक जो आनंद और खुशी मिलती है उसका इज़हार वे गीतों एवं नृत्यों के रूप में करते हैं। अरुणाचल प्रदेश का 'दामिडा नृत्य', त्रिपुरा के रियांङ जनजाति द्वारा प्रस्तुत 'होजागिरी नृत्य' फसल संबंधित नृत्य हैं। त्रिपुरा के ही 'हलाम समुदाय के लोग 'हाई-होक नृत्य' करते हैं, फसल काटने के दौरान देवी लक्ष्मी की पूजा को समर्पित होने वाले इस नृत्य द्वारा माँ से सुख की कामना करते हैं।"[7] मेघालय की गारो जनगोष्ठी का कृषि संबंधी पर्व है 'बंगाला', जिसके अंतर्गत वे अच्छी फसल तथा सुखमयी जीवन की कामना लिए अपनी पारंपरिक 'गारो नृत्य' करते हैं।

कुछ नृत्य ओजपूर्ण होते हैं जिनके माध्यम से किसी समाज विशेष की ओर से जीवन के विशेष संदेश को उजागर करने की कोशिश की जाती है। सिक्किम के लोकजीवन में याक पशु की महत्ता एवं भूमिका को प्रदर्शित करती 'याकछाम्म नृत्य' खूब लोकप्रिय है। नागालैंड का 'भालू नृत्य', 'मुर्गा नृत्य' अपनी विशिष्ट पहचान रखता है जिसमें नर्तकगण पशुपक्षी की तरह वेश-भूषा बनाकर विभिन्न मुद्राओं में अंगों को संचालित करते हुए नृत्य किया करते हैं। अरुणाचल के आदिवासी समाज द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला एक नृत्य है 'तापु नृत्य'। यह एक युद्ध नृत्य है जिसमें आदिवासी समाज द्वारा मानव के संघर्षपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति नृत्य रूप में देखने को मिलती है। ये नृत्य बड़े ओजस्वी होते हैं।

मेघालय अपनी 'बाँस नृत्य' के कारण केवल पूर्वोत्तर में ही नहीं बल्कि पुरे भारतवर्ष में विख्यात है इस नृत्य के दौरान युवतियाँ हाथों में बाँस लेकर समूह बनाकर नृत्य किया करती हैं। असम का लोकप्रसिद्ध 'बिहू नृत्य, चाय जनगोष्ठी का 'झुमुर नृत्य तथा इसी प्रकार के

अन्य नृत्यों ने पूर्वोत्तर के लोक संस्कृति को उत्कृष्टता प्रदान की है। ये सारे नृत्य मुख्य रूप से सामूहिक स्तर पर ही होते हैं तथा स्त्रीऔर पुरूष दोनों की समान सहभागिता रहती हैं।

पूर्वोत्तर भारत के लोकगीतों एवं लोकनृत्यों की विशेषताएँ

• लोकगीत एवं लोकनृत्य पूर्वोत्तर भारतके संस्कृति का अहम हिस्सा है। विभिन्न जाति-जनजतियों के पारंपरिक लोकगीतों एवं लोकनृत्यों ने पूर्वोत्तर के सांस्कृतिक भण्डार को भरा है उसे बहुरंगी बनाया है।

• पूर्वोत्तर का जनजतीय समाज सुदुर प्रकृति की गोद में बसा है फलस्वरूप लोकगीतों एवं लोकनृत्यों में प्रकृति के अद्भूत सौंदर्य की अभिव्यक्ति हुई है।

• ये लोकगीत एवं लोकनृत्य यहाँ बसे जनजाति के सामाजिक-धर्मिक रीति-रिवाजों से जुड़ा हैं तथा उनका प्रतिनिधित्व करती है।

• पूर्वोत्तर प्रदेश कृषि प्रधान क्षेत्र है। यही कारण है कि पूर्वोत्तर के सभी उत्सवपर्वों का सीधा संबंध कृषि कार्य से है जिसका स्पष्ट प्रभाव यहाँ के लोकगीतों एवं लोकनृत्यों में देखने को मिलता है।

• पूर्वोत्तर के लोकगीत एवं लोकनृत्य यहाँ बसे जनमानस के खुशी, प्रेम, कृतज्ञता और भावनाओं को प्रकट करती है। उनके निश्छल भावनाओं की अभिव्यक्ति लोकगीतों में देखने को मिलती है।"ये गीत सरल, स्वछन्द, एवं मधुर इसलिए होते हैं कि इसका निर्माण लोकमानस द्वारा, लोक के लिए, शांत और स्वछन्द वातावरण में हरेभरे दूर तक फैले खेतों बहते झरनों, गदराई अमराईयाँ और विकसित होती हुई कलियों के बीच खुले आकाश के नीचे होता है।"[8]

• पूर्वोत्तर भारत के लोकगीतों एवं लोकनृत्यों की सबसे बड़ी विशेषता है सामुहिक चेतना । जितने भी प्रकार के लोक गीतोंएवं नृत्यों की प्रस्तुति यहाँ देखने को मिलती है वह सभीसामुदायिक स्तर पर ही होती है। अत: हम कह सकते हैं कि वर्ग वैमनष्यता, जातिगत भिन्नता तथा धार्मिक कटुता के विरूद्ध पूर्वोत्तर की संस्कृति परस्पर प्रेम, स्नेह तथा भाईचारा का संदेश देते हुए भारतवर्ष की'अनेकता में एकता' वाली विशेषता को चरितार्थ करती है। साथ ही साथ स्त्री एवं पुरूष के मध्य समनता की भावना जगाती है।

निष्कर्ष

पूर्वोत्तर प्रदेश भारत की अभिन्न ईकाई है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण सदियों से आकर्षण का केंद्र रही है। इसके साथ ही साथ यहाँ की संस्कृति (जनजातीय संस्कृति) सदैव चर्चा में रहीहैं। पूर्वोत्तर की लोकसंस्कृति के अंतर्गत पूर्वोत्तर समाज के लोकगीत एवं लोकनृत्य अपनी अलग पहचान रखती है, जिन्होंने पूर्वोत्तर की लोकसंस्कृति को उत्कृष्टता प्रदान की है।

संदर्भ सूची

1) **डॉ. सौम्यरंजन दास** , *सीमाओं के बावजूद संभावनाओं की ओरहमारा पूर्वोत्तर*, नेहू ज्योति, अंक- 2, अगस्त 2018, पृष्ट.- 61
2) **अब्दुल मन्नान** ,*कार्बी जनजीवन में लोकगीत: एक अध्ययन*, www.books.google.com
3) वही
4) **हेमचंद्र बरूवा** , *असम का बिहू नृत्य*, गद्य कथा आलोक, प्रकाशन- 2010, पृष्ट- 41
5) **अहिदुज रहमान** , *लोक साहित्य और लोक संस्कृति: पूर्वोत्तर के संदर्भ में*, नेहू ज्योति, अंक- 2, अगस्त- 2018, पृष्ट- 28
6) **हेमचंद्र बरूवा** , *असम का बिहू नृत्य*, गद्य कथा आलोक, प्रकाशन- 2010' पृष्ट- 36
7) *समन्वय पूर्वोत्तर*, अंक- 10, जनवरी-मार्च 2011, पृष्ट- 24-25
8) **राजकुमार**, *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, vol.- xv, issue- 1, April2018, ISSN: 2230-7540*

युगल किशोर यादव

सहायक प्रोफेसर(हिंदी विभाग), तिनसुकिया कॉमर्स कॉलेज पो.- श्रीपुरिया(Sripuria) तिनसुकिया , असम.